IJAER/March-April 2019/Volume-7/Issue-5 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

उच्च माध्यमिक छात्रों के मिजाज के स्तर का अध्ययन

Dr. Premlata Yadav

Email:- dr.premlatayadav78@gmail.com

सार

शुरुआत में, शोधकर्ता ने समग्र रूप से लिए गए अपने नमूने के व्यक्तित्व विकास और उसके स्तर का अध्ययन किया। स्तर शोधकर्ता द्वारा लिए गए नमूने के अंतरों की व्याख्या कर रहे हैं। हालांकि अनुचित विकास के चरणों के कारण कई व्यवहार विकार हैं, शोधकर्ता ने केवल किशोरों द्वारा व्यवहार किए गए व्यवहार विकारों पर विचार किया है जो वर्तमान जांच के लिए व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। इस शोध में, क्रोध का प्रकोप, मिजाज, आवेग नियंत्रण, सामाजिक अलगाव और संदेह और अविश्वास व्यक्तित्व के प्रमुख आयाम हैं जिनका उपयोग शोधकर्ता व्यवहार विकारों के अवसर के स्तर की व्याख्या करने के लिए करते हैं। व्यवहार और व्यक्तित्व मनुष्य के विकास में विशिष्ट स्तर हैं। जब लोग अच्छा व्यवहार प्रदर्शित करते हैं, तो हम कहते हैं कि वे प्रस्तुत करने योग्य हैं। अगले स्तर पर, जब उनके पास चरित्र होगा, तो वे कुछ पूरा कर सकते हैं। एक और स्तर पर, श्व्यक्तित्वश के साथ संपन्न होने पर, वे कुछ मूल बना सकते हैं।

परिचय

हालांकि, व्यक्तित्व के कई निर्धारक हैं, शोधकर्ता ने व्यवहार के लिए बहुत महत्व दिया है क्योंकि व्यवहार, चरित्र और व्यक्तित्व सिद्धांतों के आधार पर मानव व्यक्तित्व के प्रमुख निर्धारक हैं। इसलिए शोधकर्ता ने व्यक्तित्व विकास के निर्धारकों, क्रोध के प्रकोप, मनोदशा में परिवर्तन, आवेग पर नियंत्रण, सामाजिक अलगाव, व्यवहार के संबंध में संदेह और अविश्वास को पाया है। इस शोध में, शोधकर्ता ने व्यवहार के संबंध में उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तित्व विकास का अध्ययन किया है।

चूंकि व्यवहार को वर्तमान अनुसंधान का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक माना जाता है, इसलिए शोधकर्ता ने व्यवहार विकारों को प्राप्त करने की संभावना को बहुत अधिक महत्व दिया है। विकारों की विशेषता दीर्घकालिक, सोच और व्यवहार के कठोर पैटर्न हैं जो असामान्य हैं। इस तरह के असामान्य, दुर्भावनापूर्ण व्यवहार से दैनिक जीवन, रिश्तों और कार्य, स्कूल या सामाजिक स्थितियों में कुशलता से कार्य करने की क्षमता में समस्याएं पैदा होती हैं। जब व्यवहार अनम्य, दुर्भावनापूर्ण और असामाजिक व्यक्ति के लिए और दूसरों के लिए महत्वपूर्ण संकट का कारण बनता है तो ऐसे व्यक्ति को व्यवहार विकार कहा जाता है। अंत में यह व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। सबसे महत्वपूर्ण किशोर अवधि में इन विकारों द्वारा उत्पीड़ित व्यक्तित्व का विकास सभी के लिए प्रमुख है।

वर्तमान अध्ययन के लिए प्रमुख कुंजी

शोधकर्ता ने व्यक्तित्व के सिद्धांतों का अध्ययन किया है। सिगमंड फ्रायड, एरिक एरिकसन, पियागेट, कोह्लबर्ग, ऑलपोर्ट, कैटेल, मैस्लो, स्किनर, बंदुरा, पावलोव और रोटर। शोधकर्ता ने अध्ययन के आयामों के लिए महत्वपूर्ण अवधारणा को अपनाया है, जैसे कि नाराजगी, मिजाज, आवेग नियंत्रण, सामाजिक अलगाव और संदेह और व्यवहारवादियों के दृष्टिकोण से अविश्वास।

किशोरावस्था

किशोरावस्था शब्द ग्रीक शब्द मतम किशोरावस्था 'से आया है जिसका अर्थ है परिपक्वता की ओर बढ़ना'। मनोवैज्ञानिकों द्वारा समय–समय पर कई परिभाषाएँ दी गई हैं।

जर्सिल्ड (1978) के अनुसार किशोरावस्था उन वर्षों को संदर्भित करती है जिसके दौरान पुरुष और महिला बचपन से वयस्कता, मानसिक रूप से भावनात्मक, सामाजिक और शारीरिक रूप से आगे बढ़ते हैं। रोजर्स (1947) किशोरावस्था को ष्एक अवधि के बजाय एक प्रक्रिया, समाज में स्नेही भागीदारी के लिए आवश्यक दृ ष्टिकोण और विश्वास को प्राप्त करने की प्रक्रियाष के रूप में परिभाषित करता है।

च्पंहमज.श्र (1952) ने किशोरावस्था को ष्महान आदर्शों की उम्र और सिद्धांतों की शुरुआत के साथ–साथ वास्तविकता के लिए सरल अनुकूलन के समय के रूप में परिभाषित किया। षकिशोरावस्था को परिभाषित किया गया हैरू बचपन और वयस्कता के बीच एक व्यक्ति के जीवन में मंचष

(गेलार्ड एंड गेलार्ड, 1999)। वर्तमान अध्ययन में किशोर विकास के चरण में एक स्कूल जाने वाला छात्र है, जिसकी उम्र 15–18 वर्ष की सीमा के भीतर है। वर्तमान संदर्भ में किशोरों को मानव विकास का काल माना जाता है, जिसके दौरान एक युवा व्यक्ति को निर्भरता से स्वतंत्रता, स्वायत्तता और परिपक्वता की ओर बढ़ना चाहिए।

आमतौर पर, बचपन से किशोरावस्था तक किशोरावस्था के माध्यम से आंदोलन में परिवर्तन की रैखिक प्रगति की तुलना में बहुत अधिक शामिल है। यह बहुआयामी है, जिसमें एक वयस्क व्यक्ति के रूप में एक नए व्यक्ति में एक बच्चे के रूप में एक क्रमिक परिवर्तन या कायापलट शामिल है। किशोरावस्था व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोणों के तेजी से बदलाव का चरण है। इस अवधि के दौरान शरीर में क्रांतिकारी परिवर्तन होते हैं। मन और उसका दृष्टिकोण भी महत्वपूर्ण परिवर्तनों का अनुभव करते हैं। एक किशोर में शारीरिक परिवर्तन भावनात्मक, मानसिक और सामाजिक विकास के साथ निकटता से संबंधित हैं। यदि भौतिक विकास संतोषजनक नहीं है तो अन्य सभी विकास प्रभावित होते हैं। कई माता–पिता किशोरावस्था के परिवर्तनों को अनदेखा करते हैं और उदासीनता दिखाते हैं क्योंकि यह रवैया किशोरों के लिए कई कठिनाइयों का निर्माण करता है

क्रोनोलॉजिकल रूप से, किशोरावस्था 12 से 20 वीं सदी के बीच के वर्षों में आती है। जैसा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (1992) द्वारा परिभाषित किया गया है, किशोरावस्था 10–19 वर्षों के बीच की अवधि है। किशोरावस्था की शुरुआत देश के सामाजिक अर्थशास्त्र के आधार पर संस्कृति से संस्कृति में भिन्न होती है। इस अवधि में, व्यक्ति के सभी विकासात्मक पहलुओं में महान परिवर्तन होते हैं।

किशोरावस्था समस्याओं का दौर है। भारतीय किशोरों की मुख्य समस्याएं कुछ आर्थिक स्वतंत्रताएं हैं, माता–पिता के हस्तक्षेप से छुटकारा पाने, इच्छाओं की पूर्ति, अवकाश कैसे व्यतीत करना है, और जीवन के किस दर्शन को उन्हें अपनाना चाहिए। किशोर चिंता और चिंताओं का एक दौर है क्योंकि तेजी से शारीरिक और मानसिक परिवर्तनों के साथ उसे नए वातावरण में समायोजन की समस्या का सामना करना पड़ता है। वह चिंतित, दुखी, तूफानी, असहिष्णु और विद्रोही दिखाई देता है।

किशोर अपने सामाजिक व्यवहार के बारे में चिंतित है। वह दूसरों की आलोचनाओं से बचने की कोशिश करता है। यह चिंता उनके चरित्र में अवांछनीय तत्वों को जन्म देती है, जैसेरू पहले से अधिक व्यवहार में लापरवाह, दूसरों की कम देखभाल, असभ्य जवाब देना, कम गुस्सा और नाराजगी व्यक्त करना, दूसरों की बातचीत में हस्तक्षेप करना, माता–पिता से अधिक स्वतंत्रता के लिए झगड़ा करना, पिटाई करना। घर में छोटे बच्चे, सोच में गंभीर, दूसरे की सलाह को अस्वीकार करना, आदर्शों और सिद्धांतों में कोई रुचि नहीं दिखाना, दूसरों की

आलोचना पर चिढ़ होना। कुछ समस्याएं हैं जो इस आयु वर्ग की विकास प्रक्रियाओं के भाग के रूप में किशोरों के लिए आम हैंय उसी समय कुछ प्रकार की शैक्षिक, व्यावसायिक और सामाजिक जानकारी भी होती है जो युवा लोगों को उनकी विकास संबंधी प्रक्रियाओं के लिए मददगार हो सकती है। इन्हें एक समूह की स्थिति में प्रस्तुत किया जा सकता है और इस एहसास के साथ चर्चा की जाती है कि उनकी समस्याएं उनके लिए व्यक्तियों के रूप में अजीब नहीं हैं, जैसा कि वे अक्सर सोचते हैं, लेकिन साथी छात्रों द्वारा साझा किए जाते हैं।

शिक्षा का महत्त्व

शिक्षा एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक बच्चा या एक वयस्क ज्ञान, अनुभव, कौशल और ध्वनि दृ ष्टिकोण प्राप्त करता है। शिक्षा एक व्यक्ति को सभ्य, परिष्कृत, सुसंस्कृत और शिक्षित बनाती है। एक सभ्य और सामाजिक समाज के लिए, शिक्षा ही एकमात्र साधन है। इसका लक्ष्य एक व्यक्ति को पूर्ण बनाना है।

प्रत्येक समाज शिक्षा को महत्व देता है क्योंकि यह सभी बुराइयों के लिए रामबाण है। शिक्षा जीवन की विभिन्न समस्याओं को हल करने की कुंजी है। आज शिक्षा को एक राष्ट्र और उसके नागरिकों के विकास के लिए सबसे शक्तिशाली उपकरण माना जाता है। व्यक्तित्व के विकास में अच्छे शैक्षिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है, इस पर बल देने की आवश्यकता है। अब तक के अध्ययनों ने यह साबित किया है कि जिन छात्रों को अपने जीवन के अनुकूल समय में माता–पिता का प्यार, अनुकूल घर और स्कूल का माहौल, उचित देखभाल और सुविधाएं प्राप्त होती हैं, वे अपने भावी जीवन में संज्ञानात्मक और गैर–संज्ञानात्मक क्षमता दोनों विकसित करने में मदद करते हैं। अधिगम व्यवहार में परिवर्तन है।

शिक्षा व्यक्ति को उसकी जन्मजात क्षमताओं को समझने का अवसर देती है। पुराने दिनों में, सिखाया को उस जगह तक पहुंचना था जहां शिक्षा उपलब्ध थी। शिक्षा की आधुनिक अवधारणा यह है कि इसे व्यक्ति के घर–द्वार तक पहुंचना चाहिए और स्वयं को विकसित करने के लिए उनमें बदलाव लाने चाहिए।

उच्च माध्यमिक शिक्षा

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा माध्यमिक और उच्च शिक्षा के बीच एक सेतु का काम करती है और युवाओं को उच्च शिक्षा में प्रवेश के लिए तैयार करती है। आजकल राज्य में शैक्षिक विकास को बढ़ावा देने के लिए, शिक्षा के एक समान पैटर्न (10. 2. 3) का पालन किया जाता है। इस पैटर्न में, सामान्य शिक्षा के 10 वर्षों के बाद 2 साल की उच्च माध्यमिक शिक्षा और उसके बाद 3 साल की विश्वविद्यालय शिक्षा प्रदान की जाती है। उच्चतर माध्यमिक शिक्षा 1978–1979 से शुरू की गई थी। उच्चतर माध्यमिक शिक्षा हमारे शैक्षिक सेटअप में एक प्रमुख स्थान रखती है। यह माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी प्रदान करता है। यह उच्च शिक्षा के लिए फीडर स्टेज है। यह उच्च अध्ययन के अवसरों के संबंध में महत्वपूर्ण है। इसलिए, उच्चतर माध्यमिक छात्रों के पास इस स्तर पर अध्ययन के आधार पर कुछ प्रकार के व्यवसाय के लिए कुछ वरीयता हो सकती है।

मैक्सिमम चैलेंज का चरण

उच्चतर माध्यमिक चरण कई मायनों में महत्वपूर्ण है। यह अधिकतम चुनौती का चरण है। जबकि इस आयु वर्ग के छात्र अपने जीवन के एक महत्वपूर्ण चरण से गुजर रहे हैं – किशोरावस्था से युवाओं में संक्रमण, उन्हें उपयुक्त पाठ्यक्रम चुनकर अपने भविष्य के करियर से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय लेने होते हैं। वास्तव में, आवश्यकता और योग्यता से अधिक, यह इस स्तर पर छात्रों की जागरूकता और प्रदर्शन है जो अंततः उनके भविष्य को निर्धारित करता है। क्या वे नौकरी या व्यवसाय में प्रवेश पाने में सक्षम होंगे या अपनी पसंद ६ पसंद के आगे की पढ़ाई करेंगे, छात्रों और उनके माता–पिता के मन में सबसे बड़ी चिंता है। यह चिंता और तनाव का कारण बनता है, जिसे सावधानीपूर्वक नियोजन और उनके भविष्य की आवश्यकताओं के अनुकूल उपयुक्त पाठ्यक्रम डिजाइन करने के लिए अपनाई गई रणनीतियों से बचा जा सकता है। आम तौर पर, छात्र आबादी का

केवल एक छोटा प्रतिशत तृतीयक स्तर तक पहुंचता है। यह इन्हीं में से है कि अंतिम नेतृत्व उभरता है। इन लोगों की गुणवत्ता प्रारंभिक वर्षों में विशेष रूप से उच्चतर माध्यमिक चरण में रखी गई नींव पर निर्भर करती है, जिसके उत्पाद जीवन के हर क्षेत्र में नेतृत्व के दूसरे या मध्यवर्ती स्तर प्रदान करते हैं। उनसे कृषि, उद्योग, व्यवसाय और विभिन्न अन्य सामाजिक सेवाओं में विकास के प्रयासों में 30 सार्थक योगदान देने की उम्मीद की जाती है। इस तरह के रूप में मजदूरी रोजगार के अवसर बहुत सीमित हैं। इसलिए, उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों को पूरी तरह से बुनियादी ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और उद्यमशीलता से लैस होना चाहिए ताकि वे स्व–रोजगार के लिए भी अर्हता प्राप्त कर सकें।

YOUTH को एडोलेंसेन से ट्रांजिशन का एक चरण

किशोरावस्था से युवावस्था तक संक्रमण के संवेदनशील चरण में उच्चतर माध्यमिक अवस्था मनुष्य के साथ व्यवहार करती है। यह चरण शरीर और मन दोनों की परिपक्वता की प्रक्रिया की विशेषता है। यह इस स्तर पर है कि अमूर्त सोच और तर्क मुख्य रूप से विकसित होते हैं। लक्ष्य निर्धारण और प्रतीकात्मकता अन्य विशेषताएं हैं जो इस चरण को बड़े पैमाने पर चिह्नित करती हैं। इसी तरह, आत्म–चेतना, आत्म–अभिमान जैसे लक्षण स्वयं–इंगित व्यक्तिगत प्राथमिकताओं और विकल्पों की पहचान के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं, और आदर्श गठन इस चरण के विशिष्ट हैं। छात्रों को मजबूत पसंद और नापसंद, प्रतिक्रिया और उत्साह भी दिखाते हैं और मजबूत सहकर्मी समूह प्रभाव होते हैं।

वयस्क विचारों और भूमिकाओं, अवहेलना, नैतिक तर्क और स्थापित विचारों, प्रथाओं और अधिकारों के प्रति चुनौतीपूर्ण रवैये की नकल करने की प्रवृत्ति है। यह एक बढ़ी हुई सेक्स–चेतना और यौन हितों द्वारा भी चिह्नित है। इस स्तर पर, शिक्षार्थियों के हितों और दृष्टिकोणों को क्रिस्टलीकृत और स्थिर करना शुरू हो जाता है, जो सीखने वालों की भविष्य की व्यावसायिक स्थिति को आकार देने की क्षमता रखते हैं, भविष्य के बारे में चिंता की भावना भी उन्हें परेशान करना शुरू कर देती है। इस स्तर पर, मार्गदर्शन और परामर्श को इस तरह की समस्याओं को सुलझाने में एक लंबा रास्ता तय करना चाहिए क्योंकि कोई भी तरीका अप्राकृतिक नहीं है।

इस चरण की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह सामान्य और अनिर्दिष्ट पाठ्यक्रम से विशेष प्रकृति के पाठ्यक्रमों के लिए एक संक्रमण है। इसलिए, इस स्तर पर पाठ्यक्रम में सामान्य शिक्षा और विशेषज्ञता की चुनौती, तृतीयक शिक्षा की विशेषता है। परिवर्तन जीवन के इस स्तर पर प्रहरी है। जीवन में परिवर्तन से निपटने के लिए युवाओं को लैस करने के लिए यह आवश्यक है कि सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को उचित रूप से बल दिया जाए और सावधानीपूर्वक खेती की जाए। समाज और देश में अपनेपन की भावना को जड़ से कम पोषण और समाज से अलग करने की भावनाओं से बचने के लिए पोषित होना चाहिए।

व्यवहार संरक्षक में साथी

यद्यपि बचपन को आमतौर पर जीवन का एक लापरवाह समय माना जाता है, कई बच्चे और किशोर विकास की प्रक्रिया के दौरान भावनात्मक कठिनाइयों का अनुभव करते हैं। एक भावनात्मक या व्यवहार संबंधी विकार की पहचान करना कई कारणों से मुश्किल है, जिसे निश्चितता के साथ नहीं कहा जा सकता है कि मस्तिष्क में कुछ षलत हो जाता है़, जिससे एक विशेष तरीके से कार्य करने के लिए एक किशोर होता है।

प्रारंभिक मनोरोग सिद्धांतों के विपरीत, यह निष्कर्ष निकालना असंभव है कि एक माँ या पिता ने किशोरावस्था के जीवन में कुछ गलत किया, जिससे एक भावनात्मक या व्यवहार संबंधी विकार पैदा हुआ। बच्चे की समस्याओं के लिए कौन या क्या जिम्मेदार है, इस सवाल ने एक समझ को जन्म दिया है कि विकास को प्रभावित करने वाले कारकों के संयोजन – जैविक, पर्यावरण, मनोवैज्ञानिक – लगभग निश्चित हैं।

किशोरों का व्यवहार एक निरंतरता पर मौजूद है, और कोई विशिष्ट रेखा नहीं है जो परेशान करने वाले व्यवहार को एक गंभीर भावनात्मक समस्या से अलग करती है। बल्कि, एक समस्या हल्के से लेकर गंभीर तक हो सकती है। किशोरावस्था भावनात्मक तनाव का अनुभव करती है, जैसे कि क्रोध, खुशी या उदासीनता। शारीरिक परिवर्तन और विकास भी किशोरों की भावनाओं को बहुत प्रभावित करते हैं।

किशोरों की भावनाओं की सामान्य विशेषताओं में शामिल हैंरू

1) हिंसक प्रकार

2) स्थिरता का अभाव

3) अभिव्यक्ति में नियंत्रण की कमी

4) लंबे समय तक चलने वाला भावनात्मक रोष

५) गहन चिंतन में भोग

6) भावनाओं से प्रेरणा।

भावनात्मक तीव्रता के कारणों में पुनरावृत्ति, अनिश्चितता और असुरक्षा की भावना, एक वयस्क के व्यवहार की अपेक्षा, पुरुष और महिला में पारस्परिक जिज्ञासा, विभिन्न स्थितियों में खुद को ६ खुद को अक्षम पाकर, पढ़ाई में असफलता, इच्छाओं की पूर्ति न होना, झगड़े, सख्त माता–पिता की आवश्यकता होती है। नियंत्रण, धार्मिक और व्यावसायिक समस्याओं।

अधिक बार भावनाओं का अनुभव किशोरों के अनुभव हैं

(१) चिंता

(२) ईर्ष्या करना

(३) ईर्ष्या करना

(४) भय

(५) क्रोध करना

(६) उद्घोष

(Ity) जिज्ञासा

(() स्नेह और

(‹) प्रसन्नता।

किशोरों के सामाजिक जीवन में समान रूप से कुछ समस्याएं हैं जैसे व्यवहार की कठोरता और परिणामों की मनुहार, समाज में सुधार की इच्छा और बड़ों के दोहरे मानक। किशोरावस्था में व्यवहार संबंधी समस्याओं को शिथिलता के दो प्रमुख डोमेन में वर्गीकृत किया जा सकता है, अर्थात् व्यवहार और बाहरी व्यवहार को कम करना (chenbach & Edelbrock 1978)।

बाह्य व्यवहार को अवज्ञा, आवेगशीलता, अति सक्रियता, आक्रामकता और असामाजिक विशेषताओं द्वारा चिह्नित किया जाता है। किशोरों में व्यवहार और भावनात्मक समस्याएं काफी व्यक्तिगत और सामाजिक लागतों के साथ युवा लोगों की एक बड़ी संख्या को प्रभावित करती हैं। भावनात्मक और व्यवहार संबंधी विकार वाले बच्चे और युवा समाज में एक कमजोर समूह हैं।

किशोरावस्था के दौरान होने वाले कुछ व्यवहार संबंधी विकार आम तौर पर होते हैंरू चिंता विकार,

•अनिरंतर विस्फोटक विकार,

•अस्थिर व्यक्तित्व की परेशानी,

• आवेग नियंत्रण विकार,

• द्विवी विकार आदि

सभी बच्चे के समग्र स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डाल सकते हैं। कुछ विकार दूसरों की तुलना में अधिक सामान्य हैं, और स्थितियां हल्के से लेकर गंभीर तक होती हैं। मानसिक, भावनात्मक और व्यवहार संबंधी विकारों से प्रभावित होने वाले युवाओं और उनके परिवारों की संख्या महत्वपूर्ण है। यह अनुमान है कि पांच बच्चों और किशोरों में से एक को मानसिक स्वास्थ्य विकार हो सकता है जिसे पहचाना जा सकता है और उपचार की आवश्यकता हो सकती है।

बच्चों और किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य विकार जीव विज्ञान, पर्यावरण या दो के संयोजन के कारण होते हैं। जैविक कारकों के उदाहरण आनुवांशिकी हैं, शरीर में रासायनिक असंतुलन, और केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को नुकसान, जैसे कि सिर में चोट। कई पर्यावरणीय कारक भी मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं, जिसमें हिंसा के संपर्क, अत्यधिक तनाव और एक महत्वपूर्ण व्यक्ति की हानि शामिल है। परिवार और समुदाय, एक साथ काम करते हुए, मानसिक विकारों से पीड़ित बच्चों और किशोरों की मदद कर सकते हैं। इन युवाओं और उनके परिवारों की जरूरतों को पूरा करने के लिए सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला अक्सर आवश्यक होती है।

समस्या का बयान

उच्च माध्यमिक छात्रों के मिजाज के स्तर पर अध्ययन

अध्ययन का उद्देश्य

1. उच्चतर माध्यमिक छात्रों के गुस्से के स्तर का पता लगाने के लिए।

2. उच्च माध्यमिक छात्रों के मिजाज के स्तर का पता लगाने के लिए।

3. उच्चतर माध्यमिक छात्रों के आवेग नियंत्रण के स्तर का पता लगाना।

परिकल्पना

H01 यह पता लगाने के लिए कि उनके मिजाज में पुरुष और महिला छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर है या नहीं।

 ISSN: 2278-9677

H02 यह पता लगाने के लिए कि उनके मिजाज में ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर है या नहीं।

अनुसंधान क्रियाविधि

आयामों से सत्यापन और संभव व्यवहार विकार निम्नानुसार समझाया गया है।

(प) एंग्री आउट फटना

1992 में, वॉटसन और क्लार्क को शत्रुता (शत्रुतापूर्ण व्यवहार) के क्षेत्र में शोध किया गया था जिसका मतलब है कि मित्रता या विरोध और क्रोध को मापने के लिए उच्च क्रम नकारात्मक प्रभाव कारक की पहचान की। इस शोध में, वाटसन ने पाया कि शत्रुतापूर्ण व्यवहार भावनाओं के कारण हुआ और मानव व्यवहार को क्रोध की ओर मोड़ दिया। व्यवहार के परिवर्तन के प्रसार का आधार शत्रुतापूर्ण व्यवहार से चिंता और अवसाद है। यह व्यक्तित्व पर मजबूत प्रभाव पैदा करता है। वॉटसन और क्लार्क ने यह भी जांच की कि उनकी अवधारणा व्यक्तित्व के पांच कारक मॉडल में न्यूरोटिकिज्म का पर्याय थी। यह स्पष्ट है कि, वर्तमान टूल श्एंग्री आउटबर्स्टश के आयामों में से एक उपरोक्त वॉटसन के दृष्टिकोण से लिया गया है। एंग्री आउट फट से विवादास्पद विकार आंतरायिक विस्फोटक विकार (प्म्क) एक आवेग–नियंत्रण विकार है जिसमें अचानक क्रोध के एपिसोड की विशेषता होती है। विकार शत्रुता से टाइप किया जाता है।

(ii) मिजाज

स्वभाव हमारे व्यक्तित्व के साथ जुड़ा हुआ है। यह कुछ ऐसा है जो हम युवा और शायद ही कभी बदलाव के साथ पैदा होते हैं या प्राप्त करते हैं। कुछ लोगों का स्वभाव ठीक होता है, जबकि अन्य हमेशा नर्वस या चिड़चिड़े होते हैं। इसे व्यक्ति के स्वभाव के रूप में संदर्भित किया जा सकता है क्योंकि यह उनके व्यवहार को स्थायी रूप से प्रभावित करता है। किसी व्यक्ति के व्यवहार की माप में से एक को मूल रूप से स्वभावगत लक्षणों के तहत माना जाता है। यद्यपि स्वभाव जैविक रूप से आधारित होता है, हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि स्वभाव विरासत में मिला है। चार स्वभाव प्रकार एक आद्य मनोवैज्ञानिक व्याख्या है कि चार शारीरिक तरल पदार्थ मानव व्यक्तित्व लक्षण और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। उच्च तंत्रिका गतिविधि के प्रकारों के बारे में पावलोव सिद्धांत द्वारा स्वभाव की वैज्ञानिक व्याख्या दी गई थी।

पावलोव (1951) ने उत्तेजना और ब्रेकिंग की प्रक्रियाओं के तीन गुणों (बल, स्थिरता और गतिशीलता) का वर्णन किया। स्वभाव में अचानक परिवर्तन मूड स्विंग होते हैं। अपने प्रयोग में, पावलोव ने पाया कि उत्तेजना का स्तर (उत्तेजना कहा जाता है) जो कुत्तों के दिमाग में उपलब्ध था। दूसरी तरफ, कुत्तों के दिमाग में अपनी उत्तेजना के स्तर को बदलने की क्षमता थी – यानी कि उनके दिमाग में मौजूद अवरोध का स्तर। उत्तेजना के बहुत सारे, लेकिन अच्छा निषेधरू संगीन। उत्तेजना के बहुत सारे, लेकिन गरीब निषेधरू कोलेरिक। बहुत उत्तेजना नहीं, प्लस अच्छा निषेध कफ। बहुत उत्तेजना नहीं, प्लस खराब निषेधरू उदासी। आयाम dimension मूड स्विंग 'शोधकर्ता द्वारा विशेषज्ञों के सुझाव के कारण लिया गया है क्योंकि पावलोव के प्रयोग से व्यवहार संबंधी विकारों के लिए स्वभाव में अचानक परिवर्तन का पोषण होता है और यह मानव व्यक्तित्व को भी प्रभावित करता है।

मूड स्विंग्स से व्यवहार विकार

विकार मूड स्विंग या स्वभाव में अचानक परिवर्तन के कारण होता है।

 ISSN: 2278-9677

उपकरण का मानकीकरण

शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन के लिए लिकर्ट स्केल को नियोजित करने का निर्णय लिया।

प्री–आउट करें

अन्वेषक ने एक सौ बीस आइटम तैयार किए और यह जूरी के एक समूह को दिया गया जिसमें पांच विशेषज्ञ शामिल थे। उनके द्वारा दिए गए सुझावों पर विचार किया गया और आवश्यक संशोधन किए गए। पायलट अध्ययन के लिए कुल अस्सी चार को अंतिम रूप दिया गया था।

तालिका 1 पूर्व आजमाने के विभिन्न क्षेत्रों में वस्तुओं के वितरण को दर्शाता है

S.No	Dimension	No. of. Items
1	Angry Outburst	17
2	Mood Swings	18
3	Impulse Control	16
4	Social isolation	17
5	Suspicion and Mistrust	16
	TOTAL	**84**

डेटा विश्लेषण

उच्च स्तर के विद्वानों के छात्रों के व्यवहारिक विश्लेषण और व्यक्तिगत निष्कर्षों की व्याख्या।

तालिका 2 व्यक्तिगत योग्यता के परिणामों के संबंध में मेल छात्रों के बीहड़ के बाहरी हिस्से को लेने की संभावना के स्तर

Dimensions	*Low*		*Moderate*		*High*	
	No	*%*	*No*	*%*	*No*	*%*
Angry Outburst	57	15.8	212	58.9	91	25.3
Mood Swings	63	17.5	223	61.9	74	20.6
Impulse Control	63	17.5	228	63.3	69	19.2
Social Isolation	74	20.6	209	58.1	77	21.4
Suspicion And Mistrust	74	20.6	204	56.7	82	22.8

Copyright@ijaer.org

उपरोक्त तालिका से यह अनुमान लगाया जाता है कि 15.8: पुरुष छात्रों के पास कम है, उनमें से 58.9: में मध्यम और 25.3: में उच्च स्तर का गुस्सा है।

उपरोक्त तालिका से यह अनुमान लगाया जाता है कि 17.5: पुरुष छात्रों की संख्या कम है, उनमें से 61.9: में मध्यम और 20.6: में उच्च स्तर की मनोदशा है।

उपरोक्त तालिका से यह अनुमान लगाया जाता है कि 17.5: पुरुष छात्रों के पास कम है, उनमें से 63.3: में मध्यम और 19.2: में उच्च स्तर का आवेग नियंत्रण है।

उपरोक्त तालिका से यह अनुमान लगाया जाता है कि 20.6: पुरुष छात्रों के पास कम है, उनमें से 58.1: के पास मध्यम और 21.4: के पास उच्च स्तर का सामाजिक अलगाव है।

उपरोक्त तालिका से यह अनुमान लगाया जाता है कि 20.6: पुरुष छात्रों के पास कम है, उनमें से 56.7: के पास मध्यम और 22.8: के पास उच्च स्तर का संदेह और अविश्वास है।

विश्लेषण से, यह देखा गया है कि 25.3: पुरुष छात्रों में आंतरायिक विस्फोटक विकार (IED) होने की संभावना अधिक होती है। 20.6: पुरुष छात्रों में द्विध्रुवी विकार (BPD) होने की अधिक संभावना होती है।

19.2: पुरुष छात्रों में व्यवहार विकार होने की अधिक संभावनाएं होती हैं जैसे कि ध्यान घाटे में अतिसक्रिय, द्विध्रुवी .2.4: पुरुष छात्रों में सामाजिक चिंता विकार होने की अधिक संभावना होती है। 2.8: पुरुष छात्रों में विपक्षी डिफेक्ट डिसऑर्डर होने की अधिक संभावना होती है।

निष्कर्ष

आधुनिक दुनिया में, उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम के छात्रों को परिसर के अंदर और बाहर दोनों कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इस शोध में, क्रोध का प्रकोप, मिजाज, आवेग पर नियंत्रण, सामाजिक अलगाव और संदेह और अविश्वास व्यक्तित्व के प्रमुख आयाम हैं जो शोधकर्ता द्वारा व्यवहार विकारों के अवसर के स्तर की व्याख्या करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। आधुनिक तकनीक और जनसंचार माध्यमों का विकास किशोरावस्था के चरण में छात्रों के व्यक्तित्व विकास पर बहुत प्रभाव पड़ता है। छात्रों के व्यवहार के संदर्भ में व्यक्तित्व निर्धारकों का विकास निश्चित रूप से न केवल व्यक्तिगत व्यक्तित्व बल्कि पूरे समाज की प्रगति में योगदान देता है। जैसा सीखने वाला है, वैसा ही विद्यार्थी है। इसलिए शिक्षकों के लिए यह देखना हमेशा महत्वपूर्ण होता है कि उनके छात्र संतुलित व्यक्तित्व बनाए रखें। इस अध्ययन में अन्वेषक ने व्यवहार के संदर्भ में कुछ चुने हुए व्यक्तित्व निर्धारकों के संदर्भ में छात्रों के समग्र व्यक्तित्व विकास को सामने लाने का प्रयास किया, जो व्यक्तित्व विकास के जांच स्तर का आधार बनता है, जिसमें वे व्यवहार संबंधी विकार पैदा करते हैं। स्कूल अधिकारियों को एक अच्छा स्कूल वातावरण बनाने में अपनी जिम्मेदारी को समझना चाहिए ताकि वे अपने छात्रों के बीच एकीकृत व्यक्तित्व विकसित कर सकें। यह छात्रों को इस समाज के एक योगदान सदस्य के रूप में स्कूली शिक्षा को सफलतापूर्वक छोड़ने में मदद करेगा और देश में संपूर्ण उच्च शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाएगा।

संदर्भ

1. किरीट जोशी ।1992। वेद और भारतीय संस्कृति, नई दिल्ली, राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, नई दिल्ली।

2. मंगल, एस। के। (2008) उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान। – Tata M-C-Grow Publishing Company limited & नई दिल्ली मंगल, एस। के। (2002) उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान। नई दिल्लीरू सी। आर। कॉलेज ऑफ एजुकेशन, हरियाणा।

3. मारमार मुखोपाध्याय। (2005. शिक्षा, संत प्रकाशन, नई दिल्ली में कुल गुणवत्ता प्रबंधन

4. नॉर्मन एल। मुन्न, लॉयड डॉज फर्नांड (1972)। मनोविज्ञान का परिचय, ह्यूटन मिलफिन कंपनी।

5. रवि एस। शमूएल (2011)। शिक्षा का एक व्यापक अध्ययन, नई दिल्लीरू पीएचआई प्रकाशक।

6. स्वामी रंगनादानंद (2001)। स्वामी विवेकानंद की शिक्षा, बेलूररू श्री रामकृष्ण मठ।

7. स्वरूप सक्सेना मज.ंस, (2008), टीचर इन इमर्जिंग इंडियन सोसाइटी, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।

8. शर्मा (1970)। एडवांस्ड एजुकेशनल साइकोलॉजी, नई दिल्लीरू टोंड पब्लिकेशन। 29. तान चुंग, अमिय देव (2011)। टैगोर और चीनय नई दिल्लीरू साधु प्रकाशन।

9. योगेश कुमार सिंह, रुचिका नाथ (2005)। टीचिंग ऑफ साइकोलॉजी, नई दिल्लीरू एपीएच पब्लिकेशन।

10. बोनट, गेब्रियल। (2008) त्रैमासिक समीक्षा की तुलनात्मक शिक्षा, अ38 द3 च325—344।

11. चलि माला (1996)। भारतीय शैक्षिक सार। इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एंड एजुकेशन वॉल्यूम। 27 (2) 87—92।

12. घेट्टी, सिमोनाय लियोन्स, क्रिस्टन ई।य लाजरीन, फेडेरिकाय कॉर्नोल्डी, सेसारे (2008) रिट्रीमेंटल के दौरान मेटामेरी मॉनिटरिंग का विकासरू मेमोरी केस ऑफ मेमोरी स्ट्रेंथ एंड मेमोरी एब्सेंस। प्रायोगिक बाल मनोविज्ञान जर्नल, अ99 द3 च157—181